दरकते रिश्ते

''नमस्कार! मिस्टर कामत, मैं आपके बेटे का टीचर रणदीप हूँ। काफी देर से आपसे मिलने की बाट जोह रहा था। अन्दर आपके पास कार्ड भी भेजा था परन्तु शायद आपके पास वक्त ... पर मुझे आपसे मिलना ही था इसलिए मैं आपके बाहर निकलने का इंतजार कर रहा था?''

''हाँ असल में मेरी बिजनेस के सिलसिले में किसी से मीटिंग है इसलिए जल्दी में हूँ।''

''परन्तु आज तो कबीर का बर्थडे है आपके घर पर, उसकी पार्टी है क्या आप शामिल नहीं होंगे।''

''कबीर का बर्थ-डे ... होगा ... मुझे तो नहीं मालूम मैं अपनी वायफ से पूछता हूँ।''

''..... कणिका ..... ''

''लुक, आज तो चार मार्च है उसका बर्थ डे चार अगस्त को होता है। शायद अपने दोस्तों को बुलाने के लिए उसने बहाना गढ़ा हो ... बैटर यू आस्क हिम ... बरहाल, मैं अपनी फ्रेण्डस के साथ जिमखाना क्लब में हूँ मुझे डिस्टर्ब करने की जरूरत नहीं।''

''एक्टयुअली मेरी वायफ काफी सोश्यल है। आजकल ऊँचा दर्जा बनाये रखने के लिए, अपने स्टेटस और अपनी पहचान बनाने के लिए सोसाइटी में रिलेशन्स बनाने बहुत जरूरी हैं इसलिए ... ''

''सर ठीक है, आपकी नजर में सोसाइटी रिलेशनशिप की अहमियत है पर क्या पारिवारिक रिश्तों की कीमत पर ... ''

''मतलब मैं समझा नहीं ...''

''सर मैं कबीर का अध्यापक होने के साथ-साथ एक काऊंसलर भी हूँ। समाज से दूर जा रहे बच्चों को वापस जिंदगी से जोड़ना, उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में प्रयास करना, टूटते परिवारों को स्वाभाविक अपनेपन के माध्यम से आपसी जुड़ाव लाने के लिए काम करना मेरा जुनून है और यही मेरी समाज सेवा भी है। सर, कबीर को पिछले साल आपने इस स्कूल में डाला था।''

''हाँ पिछले स्कूल में वह बुरी संगत में था और ... ''

''क्या स्कूल बदल देने से सब ठीक हो गया। पिछले साल उसने अपना मेडिकल प्रमाण-पत्र लगाकर बोर्ड की परीक्षा नहीं दी।''

''इस साल भी न तो वह स्कूल ही आता है न ही पढ़ता है ... आपको अनेक बार सूचना भेजी गई परन्तु आप ने कभी ध्यान नहीं ...''

''मिस्टर रणदीप इज़ ए ग्रोन अप चाइल्ड और उसे अपने बारे में ठीक निर्णय लेने चाहिए। हम ने तो उसे पूरी सुविधाएँ दी हैं। पैसा खर्चा ... स्टेट्स सक कुछ ... उसको अच्छा आधार देने के लिए ही हम तो दिन-रात काम करते ... ''

''बहुत अच्छी बात है मिस्टर कामत कि आप अपने बच्चे के बारे में इतना सोचते करते हैं। तो चलिए, क्यों न आज हम उसे उसकी बर्थडे पार्टी में ज्ऑयन कर लें प्लीज ...''

''पर मेरी बिजनेस मीट ... ''

''आज मेरे कहने पर आप उसे पोस्टपोन कर दें प्लीज ... और हाँ अगर हो सके तो अपनी वायफ को भी घर बुलवा लें। क्योंकि बर्थडे पर माँ-पापा दोनों होंगे तो निश्चित ही उसे अच्छा लगेगा।''

''हूँ देखता हूँ ...'' अपनी सैक्रेटरी को कुछ निर्देश देकर तथा अपनी पत्नी को फोन करके बोले, ''ठीक है चलिए ...''

''ओ माय गॉड कबीर यह क्या, इस उम्र में व्हिस्की ये हार्ड ड्रिंक्स ...'' हाथ में गिलास और सिग्रेट लेकर झूमते नाचते लड़के लड़कियों को देखकर मिसेज कामत परेशान सी चिल्लाई

''क्यों आप लोग ड्रिंक नहीं करते क्या फिर ...''

''अरे आप लोग तो अभी छोटे हो, ये हार्ड ड्रिंक्स तो हम बड़ों के लिए हैं और ये लड़कियाँ कौन हैं ओह ... कैसी पार्टी है यह ... वैसे भी तुम्हारा बर्थडे तो अगस्त में ...'' कबीर के पापा हैरानी से कहने लगे

''आपको मतलब! यह मेरी लाइफ है मैं अपने तरीके से जीऊंगा। मैं अपना बर्थडे मंथली बेसिस पर मनाऊं या डेली तुम्हें क्या। आप अपनी लाइफ अपने ढ़ंग से जीते हैं मुझे भी अपनी जिंदगी अपने ढ़ंग से जीने का हक है। हाँ आज आप लोगों को अपने काम अपनी सोसाइटी अपनी जिंदगी से फुर्सत कैसे मिल गई जो मेरी लाइफ डिस्टर्ब करने आ गए। मेरे मित्रों के सामने कुछ कहने की जरूरत नहीं, आप जाओ यहाँ से ... ! वैसे भी तो आप कहते हैं कि मैं बड़ा हो गया हूँ और मुझे अपनी जिंदगी के बारे में खुद ही सोचना है अपने लिए खुद फैसले लेने हैं ''कबीर चिल्लाया जो रणबीर जी ने कबीर के दोस्तों से कहा, ''बेटा आप सब लोग बैठ जाओ क्यों न हम सब मिलकर बातचीत करें। आपके पैरन्ट्स को तो मालूम ही होगा कि आप सब यहाँ हैं चलो उनको भी बुलवा लेते हैं ...''

''नहीं नहीं'' कहते हुए बच्चे वहाँ से तेजी से निकल गए ...

''यह क्या है कबीर की इतनी हिम्मत कि मेरे घर में ...''

''मिसेज कामत प्लीज आप शांत हो जाओ।''

''ठीक है आपने आर्थिक तौर पर उसे कोई कमी नहीं रखी पर क्या आपने उसकी भावनात्मक जरूरतों के बारे में जानने समझने की कोशिश की ... कि वह कैसे कहाँ किस की संगत में वह अपना समय बिताता है। असल में किशोरावस्था जैसी कच्ची उम्र में बच्चों को भौतिक सुविधाओं के साथ-साथ संवेदनशीलता, अपनेपन, आपसी संवाद, स्पर्श, जुड़ाव तथा भावनात्मक सहारे की जरूरत होती है। कबीर शायद आपकी इकलौती संतान है ...''

''नहीं उसकी बहन काव्या भी है वो ऽ ऽ ऽ हॉस्टल में है इससे पहले कबीर भी हॉस्टल में ही था। असल में हमें समय ही नहीं मिलता उन्हें देखने कर इसलिए ...।''

''कबीर के दादा-दादी ... या अन्य कोई बड़ा''

''हैं तो पर वो हमारे साथ नहीं रहते। बच्चों को उनकी टोका-टोकी, दकियानूसी रहन-सहन पसंद नहीं।''

''और आपको तथा कबीर की मम्मी को ...?''

''शायद भौतिकता और आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में आपको भी उनके

पारम्परिक नैतिक मूल्यों, परम्पराओं, आचार-व्यवहार संहिता से परेशानी है इसलिए दकियानूस कहकर यों ...। अगर वे इन बच्चों के साथ रहते तो न तो आपको इन्हें हॉस्टल भेजना पड़ता और न ही यह अपनी भारतीय संस्कृति से विमुख होते। इस उम्र में अपने हमउम्र दोस्तों के साथ-साथ अनेक असामाजिक तत्वों द्वारा अपने स्वार्थ हेतु किशोरों को अनैतिक कार्यों एवं बुराइयों की तरफ ले जाने के लिए अनेक दबाव होते हैं। कच्ची माटी के गढ़े इन किशोरों को उनकी इस अवस्था में बड़ों द्वारा सही दिशा बोध करवा कर तथा अपने स्नेह, संवाद, स्पर्श, अनुभव परिपक्व व्यवहार की भट्टी में तपा कर उन्हें समाज में लिए उपयोगी नागरिक बनाने की जरूरत होती है अगर उन्हें सशक्त सही स्नेहिल समझदार सहारा तथा मार्गदर्शन न मिले तो ये किशोर भटक कर अपना जीवन तो नष्ट करते हैं साथ में समाज के लिए भी नासूर बन जाते हैं ... इसलिए आप स्वयं अपने बच्चों को समय दें। धैर्य के साथ उनसे संवाद कर उन्हें विश्वास में लेकर हर स्तर पर अपना साथ तथा सर्पोट दें ...। मैं और मेरे विद्यार्थी मिलकर ऐसे किशोरों को राह पर लाने का काम करते हैं क्योंकि उनको अपने हमउम्रों की बात जल्दी समझ में आती है। मुझे उसकी इस भटकन के बारे में सहपाठी से पता चला है। मैं और मेरे साथी विद्यार्थी अपने ढ़ंग से बिना बताए उसे काऊंसल करेंगे। पर जो काम आप दोनों कर सकते हैं वो हम नहीं इसलिए आप अपना वक्त देकर अपने स्तर पर कोशिश करते रहिए। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। आपको जहाँ हमारी सहायता की जरूरत पड़ेगी मैं और मेरे साथी आपके साथ हैं।'' कहकर रणदीप ने मिस्टर कामत का कन्धे पर हाथ रखकर आश्वासन दिया और विदा ली।

बर्फ होती संवेदनाएं

भारत में जन्मे-रहे-जिए श्रीधरजी अब बुढ़ापे में विदेश में रहने को तैयार न थे। अपनी मिट्टी से मोह, देश की हवाओं में रमा रोम-रोम, अपनेपन की सोंधी खुशबू से आसक्त तन-मन . . .

''न . . . नहीं . . . ! मैं नहीं आ सकता, रोहित, परदेश में !''

विदेश में रहने वाला महत्वकांक्षी बेटा अकेले पिता का क्या करे ? कुछ सोचकर उसने घर-द्वार बेच पिता की व्यवस्था स्थानीय वृद्धाश्रम में कर दी और अपने कर्तव्य से निजात पाई। कभी-कभार एक-आध फोन या डाक द्वारा स्वेटर, टोपी का उपहार . . .

यूं ही साढ़े चार बरस गुजर गए। बेटे को न आना था, न आया।

श्रीधर बाबू ही चले गए। रोहित को खबर दी गई।

रोहित ने तुरंत तार भिजवाया, ''छुट्टी मिलना संभव नहीं। कृपया क्रियाकर्म कर दें। एक वीडियो रील बनवाकर अंत्येष्टि एवं वीडियोग्राफी के खर्च का बिल भिजवा दें। चेक भेज दिया जाएगा।''

वृद्धाश्रम-प्रभारी ने वितृष्णा से भरकर तार के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और एक आह भरकर उठ गए श्रीधरजी की अंतिम यात्रा की तैयारी करने।

पुत्र-ऋण

हमारे सेक्टर का सिटी पार्क हमारे घर से अधिक दूर नहीं है। सांझ को ढलती उम्र के बहुत-से लोग अपनी बहुओं व पोते-पोतियों को स्वयं से निजात दिलवाने के उद्देश्य से पार्क में चले आते हैं। यहाँ सब एक जगह इकट्ठे होकर एक-दूसरे के सुख-दु:ख तथा तजुर्बे बाँटते। इनमें से कुछ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग समाचार-पत्र-पत्रिकाओं एवं टी.वी. चैनलों से एकात्रित जानकारी का आदान-प्रदान कर, एक-दूसरे को बेहतर तथा सुखी बुढ़ापा गुजारने हेतु टिप्स देते। यूं मैं उम्र में इन सबसे बहुत छोटी हूँ फिर भी नियमित मुलाकातों के चलते मैं भी इन सबके बहुत करीब आ गई।

हर सांझ जब बच्चे खेलने जाते, मैं भी पार्क पहुँच जाती। मैंने 'ओल्ड इज गोल्ड' की तर्ज पर इनके संगठन का नामकरण 'गोल्ड क्लब' कर दिया। स्वस्थ जीवन हेतु इनकी जागृति देख मैंने इन सबको सायं पाँच बजे से छह बजे तक यौगिक क्रियाएं व प्राणायाम तथा हल्के-फुल्के योगासन करवाना शुरू कर दिया। अक्सर थोड़ा जल्दी पहुँचकर मैं सबका हालचाल पूछती। इनमें से अधिकतर बहुत अच्छे सरकारी अथवा अर्द्ध-सरकारी पदों से सेवानिवृत पेंशन-भोगी अधिकारी थे। लगभग छियासठ वर्षिय वरिष्ठ नागरिक श्री मोहनलाल बत्रा एक नामी फर्म से मैनेजर एकाउंट्स के पद से सेवानिवृत हुए थे। उन्हें लगभग सोलह हजार रुपये मासिक बतौर पेंशन मिल रहे थे। एकाएक उन्होंने पार्क में आना बंद कर दिया।

काफी दिनों बाद पता चला कि बत्रा अंकल ने अठारह हजार रुपये मासिक पर पार्ट-टाइम नौकरी ज्वाइन कर ली है। पुराने चावलों के पारखी और कद्रदान मिल ही जाते हैं। पर मैं सोचती-बत्रा अंकल को क्या जरूरत है इस उम्र में मारा-मारी करने की?

आज क्रिसमस की शाम को अचानक बत्रा अंकल को पार्क में देख कर सुखद आश्चर्य हुआ। पर अंकल एकदम उदास, परेशान तथा उखड़े-उखड़े से नजर आ रहे थे।

मेरे साग्रह पूछने पर उन्होंने भरी आँखों से देखा, फिर भर्राएं गले से बताया, ''सौम्या बेटे! मेरे दो लड़के हैं, दोनों इंजीनियर हैं। मैंने रिटायरमेंट से पहले दोनों की शादियाँ दोनों के लिए अलग-अलग 500 वर्ग गज के मकान बना दिए। दोनों के दो-दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा अच्छी नौकरी करके ऐशोआराम से अपना परिवार पाल रहा है। छोटा बदतमीज है, नौकरी मिलने के कुछ दिन बाद

ही लड़-झगड़कर छोड़ देता है। वह अक्सर जब-तब आकर मुझसे मारपीट करता है तथा पेंशन के सारे पैसे भी ले जाता है। अब उसके परिवार की जरूरतें मेरी पेंशन से भी पूरी नहीं हो पाती हैं इसलिए मजबूरन मुझे यह नौकरी करनी पड़ी। आखिर बाप होने के नाते उसे तथा उसके परिवार को लावारिस भूखा मरने को तो नहीं छोड़ सकता! पुत्र को जन्म देने का ऋण तो चुकता करना ही है। कल वह फिर आया था, पैसे लेने। मैंने उसे समझाने की कोशिश की तो उसने खूब गाली-गलौच की तथा मुझ पर हाथ भी उठा दिया।'' कहकर उन्होंने अपने कंधे पर चोटों के निशान दिखाए।

माँ की ममता को तो दुनियाँ मानती और सलाम करती है, लेकिन पितृत्व के इस विलक्षण उदाहरण के सामने तो मैं नतमस्तक ही हो गई।

दादी माँ

''मम्मी आज घर मे आप की किटी-पार्टी, मीटिंग या शॉपिंग का कोई कार्यक्रम नहीं था क्या?'' रोजाना की तरह चार बजे स्कूल से लौटे श्रेयस ने आज मम्मी को घर में पाकर हैरानी से पूछा जो वह खिसियाती हुई बोली, ''तुम्हें क्या, मेरा घर है, मैं चाहे जो करूँ। जा किचेन से खाना लेकर खा ले।''

''क्यों आज दादी माँ कहां हैं रोज़ तो वो ही ...?''

''पता नहीं कहीं गई होंगी आस-पड़ोस में, मुझे नहीं मालूम ... तुझे क्या करना है उनका।''

''मुझे उनसे अपनी बातें करनी थी स्कूल की, पढ़ाई की, टीचर्स की, फ्रेंडस की ... मेरी सारी प्रॉबलम का सॉल्यूशन उन्हीं के पास होता है और फिर मैंने तो आज तक उन्हें कहीं जाते नहीं देखा। वो तो हमेशा मेरे साथ ही खाना खाती हैं। फिर आज क्या ... नहीं जरूर आपने कुछ किया होगा, बताइये क्या हुआ?''

''वो असल में सुबह फिर वही पुराना राग ... हमेशा की तरह अपने शरीर में जगह-जगह दर्द बताकर डॉक्टर के पास ले जाने को कह रही थीं तो तुम्हारे पापा ने डाँट दिया कि सारा दिन चख-चख करके दिमाग खाती रहती हैं जाने कब जान छोड़ेंगी ... शायद तभी वो ... ''

''पर मम्मी आज तक पापा उन्हें डॉक्टर के पास लेकर तो नहीं गए। आपको और मुझे तो झट से ले जाते हैं।''

''असल में उनकी बीमारी बुढ़ापा है।''

''क्या बुढ़ापे में स्वस्थ रहने की जरूरत नहीं होती? और हाँ वो सुबह से नहीं हैं आपने उन्हें ढूंढने की कोशिश नहीं की?''

''मैंने सोचा पड़ोस में बदनामी होगी।''

''छोड़िये, आपकी झूठी शान, मैं ढूंढ कर लाता हूँ उन्हें।''

''नहीं, दादी माँ तो कहीं नहीं मिली। पापा आप अब आए हैं न जाने वो इतनी तेज गर्मी

में कहाँ भटक रही होंगी। अब तो अंधेरा होने वाला है। यह सब आपकी वजह से हुआ है।''

तभी सांझ के धुंधलके में दूर से आती दादी माँ को देखकर श्रेयस दौड़कर लिपट गया उनसे। ''कहाँ चली गई थी तुम दादी माँ! मैंने कहाँ-कहाँ नहीं ढूंढा तुम्हें।'' दादी माँ ने रोते हुए श्रेयस को छाती से लगा लिया। उनकी आँखों से भी बरसों से रुका जल का सोता फूट निकला।

''अब कहीं मत जाना। मैं लाऊँगा तुम्हारे लिए दवाई। देखो, मैंने अपनी पॉकेट-मनी जमा कर रखी है तुम्हारे लिए'' श्रेयस ने जेब से पैसे निकालकर उनके सामने अपनी हथेलियाँ पसार दीं।

दादी माँ ने नजर उठा कर सिर झुकाए मम्मी-पापा को देखा और बोलीं, ''बेटा मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे तुम्हारा पैसा नहीं, बस प्यार चाहिए सिर्फ प्यार।'' और श्रेयस का हाथ थामें वे घर के अन्दर चली गई।

श्रेयस ने कमरे में ले जाकर उन्हें आरामकुर्सी पर बैठाया तथा दौड़कर किचन से पानी लाकर उन्हें पिलाया फिर पास बैठकर कहने लगा, ''दादी-माँ!''

दादी माँ ने दायाँ हाथ उसके सिर पर रखकर बाएँ से हाथ थामकर मंगलकामना करते हुए शुभाशीष दिया, ''सदा खुश रहो, बहुत बड़े-आदमी बनो।'' जरा थमकर वे फिर कहने लगीं, ''बेटा, मैंने भी तुम्हारे पापा से उतना ही प्यार किया है जितना वे तुझसे करते हैं। तू जीवन में कभी कुछ ऐसा न करना कि जिससे उनका मन दुखे। तू पढ-लिखकर अपने पापा जैसा लायक और बड़ा आदमी जरूर बनना परन्तु उसके साथ-साथ उनका बेटा भी बनकर रहना क्योंकि बुढ़ापे में माँ-बाप की शक्ति, ऊर्जा कम होने लगती है ... यों जीवन की बहुत-सी जरूरतें भी कम हो जाती हैं परन्तु अपनेपन की, अपनों के साथ कुछ पल बिताने, बतियाने की, उनके संग-साथ की, उनके स्पर्श की, प्रेम की, चाहना हमेशा बनी रहती है।

बेटा! तुम्हें अपनी चाहत, जरूरत और पसंद के बहुत से साथी मिलेंगे परन्तु अपने माँ-पापा को उनके हिस्से का साथ जरूर देना। अपने सम्वाद, स्वर्श और अपनेपन की छुअन से उनको अहसास दिलाते रहना कि घर में उनकी उपस्थिति बहुत मायने रखती है। जितनी बार सम्भव हो उन्हें माँ-पापा कहकर आवाजें जरूर लगाना ... कानों को भला मालूम देता है। कभी-कभी माँ की गोद में सिर रखकर लेट जाना, कभी गले में बाहें डालकर सीने से लग जाना, जरा पास बैठकर पापा का हाथ सहला देना, उनके मन की बात जानने की कोशिश करना।''

''बेटा, असल में बच्चा बूढ़ा एक बराबर होते हैं, उनकी जरूरतें भी लगभग एक-सी होती हैं। बचपन में बच्चा, माता-पिता पर आश्रित होता है और हठ कर साधिकार वह सब माँग लेता है जो उसे चाहिए होता है परन्तु बुढ़ापा संकोचवश अपनी जरूरतों को ओठों पर नहीं ला पाता भीतर तक सालने वाला असहनीय दर्द है बुढ़ापा ... बहुत संवेदनशील हो जाता है व्यक्ति तब और चाहता है कोई नजदीक बैठ जाए उसके, सहला-पुचकार दे, न तो मात्र छू भर ले और ... इसलिए मेरे बेटे-बहू का ख्याल रखना तू बड़े होकर और जो कहीं बदकिस्मती से उनमें से एक जन अकेला रह जाए तो और भी ज्यादा ... क्योंकि ... सांध्यबेला बहुत उदास होती है''।

उम्र के उस मोड़ पर

सबसे पहले बेटा रौनित स्कूल के लिए निकला, थोड़ी देर बाद रमोला, आधे घण्टे बाद जब उनके पापा निकले तो नौ बज रहे थे। मानो भोर से अब तक एक तूफान बरप कर थम गया था, मैंने चैन की साँस ली और झाड़ू तथा झाड़न उठा कर बिटिया के कमरे में आ गई। ओह, कैसी लड़की है यह, सोलहवें में चल रही है पर कौन कहेगा। वही बेतरतीब चादर, नीचे गिरा तकिया, इधर-उधर लटकते-भटकते कुशन, बिस्तर पर गीला तौलिया, बिखरी किताबें, खुले पेन ... । मैं धीरे-धीरे सब समेटने लगी। रखते हुए फिजिक्स की किताब से कुछ गिरा जो मुझे झिंझोड गया, ''हैं यह फिजिक्स जैसे रूखे-सूखे विषय में खूबसूरत ग्रीटिंग!! क्या करूँ? बेलिफाफा कर के जरा देखूं, नहीं नहीं ... घोर अशिष्टता! मैं तो बच्चों को प्राईवेसी का समान रखने का पाठ पढ़ाने वाली माँ हूँ, मुझे नहीं देखना चाहिए ... ।'' पर अचानक इस किताबी अंदाज की शिष्ट, भावुक मीठी-प्यारी माँ पर अचानक सर्द सतर्क और सुरक्षा दर्शाती माँ हावी हो गई। कार्ड में लिखा था, ''टू तन्मय माय स्वीटैस्ट वन'', मैंने कार्ड पलटा उस पर लिखा था-वर्थ डेज आर नो लाफिंग मैटरज वट इन योर केस आइ वान्नू मेक एन एक्सैप्शन ... हाँ ... ! हाँ ! फिर सुनहरी बड़े हर्फो में लिखा था ''ऐनी वे हैप्पी बर्थ डे''

''क क ... ऽ ऽ ऽ या!'' मुझे जैसे चक्कर आ गया था। मैं धम्म से बैठ गई। यह कब हो गया कैसे हो गया? बित्ते भर की छोकरी और ... यह तो मुझे सब बताया करती थी। कितना नाज था मुझे कि मैं अपने बच्चों की सबसे अच्छी दोस्त हूँ हमराज हूँ पर अब ... ।'' मेरा मन हजारों चिन्ताओं आशंकाओं से घिर गया, कौन होगा यह तन्मय कब, कहाँ, कैसे मिला होगा रमोला को ... न जाने क्या किया होगा मेरी बेटी के साथ कहीं उस मासूम से खेल कर छोड़ दिया। उफ माँ, जरा लौटे यह लड़की तो मैं उसकी खबर लूँ। हजारों दुशिचिन्ताएँ बहते आँसुओं में मुझे सुलगा रही थीं कि तभी फोन की घण्टी बजी ...

''हैलो! हाँ माँ ...''

माँ की स्नेहिल आवाज सुनकर मानो चिंता-आशंका का बादल फट कर छमाछम बरसने लगा। तू रो रही है, नीलू, क्या हो गया, कौन सी मुश्किल आन पड़ी।''

''वो ऽ ऽ ऽ माँ रोमा को किसी से प्यार हो गया'' हिचकियों में लिपटे शब्दों में मैं बहुत मुश्किल से कह पाई।

''तो रो क्यों रही है, तुझे तो खुश होना चाहिये कि तेरी बेटी नार्मल है क्योंकि उम्र के इस मोड़ पर तो होना चाहिए।''

''मेरी जान पर बनी है और आपको मजाक सूझ रहा है ...'' बिफर पड़ी थी मैं ...

''क्यों ... डर रही हो कि बेटी कहीं कुछ कर न बैठे। भरोसा नहीं है अपने संस्कारों पर, अपने पर, अपनी बेटी पर तुझे ... किशोर बच्चों के माँ-बाप का यह समय सब से ज्यादा आजमायश का होता है। जब बच्चे न छोटे समझे जाते हैं न ही बड़े ... असमंजस भरी उम्र के इस नाजुक मोड़ पर औलाद जिंदगी से कुछ अलग चाहने लगती है और अपनी चाहत पूरी करने के लिए वह अजीब से रिश्ते तलाशने-तराशने लगते हैं वह भी नितांत अकेले अपने दम पर, क्योंकि उन्हें अपने पर असीम विश्वास होता है। तुम्हें याद है अपने भाई का पहला प्यार और उसके लिए तुम्हारी अंधाधुंध सपोर्ट ... कैसे विद्रोही हो गए थे तुम दोनों ... दूर क्यों जाती हो। क्या आबिद को बिलकुल भूल गई। याद है, जिंदगी के उस मोड़ पर मिला था जब तुम हॉर्मोनल परिवर्तनों के कारण भयंकर शारीरिक मानसिक तनाव से गुजर रही थी और आविद से मिलने के बाद तुम्हें लगने लगा था कि सब कुछ बहुत प्यारा है, दुनिया बहुत खूबसूरत है और उसमें जीने का मजा ही अलग है। सुन रही हो न तुम ... असल में जिंदगी में आने वाला हर व्यक्ति जिस वक्त हम से जुड़ता है वह उस वक्त की जरूरत होता है। उस पल उससे जुड़ाव, उसकी मोहब्बत, उसकी परवाह, उसका स्पर्श, उसका संवाद हमारी सकारात्मक ऊर्जा होते हैं जो हमें जीवन के बदलावों से विसंगतियों से लड़ने की ताकत देते हैं। है ... न'' ''अच्छा फोन रखती हूँ तेरे पापा को खाना देने का वक्त हो गया।''

''आविद जिसे पिछले सत्रह बरसों से भूल, मैं अपने परिवार की बगिया की बागवान बनी अपने गुलों की महक में सराबोर थी, आज अचानक हौले से नजरों के सामने आकर खिलखिलाने लगा। वही आविद जिसने कभी नहीं कबूला कि वह मुझसे मोहब्बत करता है, कभी नहीं कहा कि वह जिंदगी भर मेरे साथ चलेगा। पर जिसने हर परेशानी में मेरा साथ दिया, मुझे पल-पल सम्भाला, सहारा दिया ... न जाने कौन सा रिश्ता था उसका मुझसे? न धर्म न पारिवारिक माहौल न रीतिरिवाज न रहन-सहन न नजरिये का ... पर फिर भी वह कितना अपना लगता था जो मुझे किसी और के साथ देखते ही सुलग उठता था, आँखों में ढेर सी शिकायतें खीझ लेकर उबल पड़ता था। सोचकर

सब नार्मल लगने लगा। मैं हल्की हो चाय बनाने को उठी थी तभी दरवाजे की घण्टी घनघनाई देखा तो सामने रोमा खड़ी थी। ''मम्मी फिजिक्स की बुक भूल गई थी ... यह तन्मय है ... तन्मय चैटर्जी ... अभी नाराज है, फिर कभी मिलवाऊँगी।'' कहकर वह उसकी तरफ देखकर शरारत से मुस्कराई। वह मेरे पैरों पर झुक गया तो मैंने उसे थाम कर पैनी निगाह से उसकी आँखों में झांका वहां वही शिकवे शिकायतें खीझ झलक रही थी। उसका गाल थपथपाकर मैंने मुस्कुराते हुए उन्हें विदा किया।

बेटा-बेटी

''अरे नीरजा! सुनो आज तुम स्कूल नहीं आई थी, मालूम है, आज क्या हुआ। बस स्टाप पर दो अजनवी लड़के मुझे यहाँ-वहाँ छूकर फब्तियाँ कसने लगे फिर गाना गाने लगे ... वाह सोणियो! अपन के साथ घूमने चलती है क्या ...''

मैं बहुत डर गई और उनसे कहा कि मैं तो उन्हें जानती तक नहीं और मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं तो वे कहने लगे क्योंकि तुम बहुत सुन्दर हो और हमें पसंद आ गई हो, आज की शाम हमारे साथ चलो।

''अरे राशि, बस स्टॉप पर और कोई नहीं था क्या?''

''अपने सहपाठी रमन, नमित वगैरह थे।''

रमन ने उन लड़कों से कहा, ''ये आप लोग क्या कर रहे हो? यों लड़कियों को परेशान करना शराफत की बात नहीं।''

तो उन में से एक लड़के ने रमन को पीछे धकेलते हुए ढीटता से कहा, ''अबे चल ना यह कोई लड़की नहीं पटाखा है हमें पसंद है तू क्या जाने बच्चा है अभी, चल अपने काम से मतलब रख और हवा आने दे।''

रमन ने नमित से कहा देख यार ये बदमाश मवाली, राशि को तंग कर रहे हैं, चल उसकी मदद करें, तो वह चिल्लाया ओए मेरी क्या लगती है जो मैं इसकी मदद करूँ। तब रमन ने उसे समझाने की कोशिश की कि यार लगना क्या होता है राशि हमारी सहपाठी है फिर इंसानियत का भी एक रिश्ता होता है चल आ उन बदमाश लड़कों को समझाएँ। वो दो हैं और बड़े भी ... देख राशि को कैसे ...

नमित बोला ''मुझे बेकार में पंगों में पड़ने का शौक नहीं। उसका भाई रोहित भी तो है हमारी क्लास में वह कहाँ है क्यों नहीं अपनी बहन के साथ रहकर उसकी मदद करता। मैं तो कहता हूँ कि तू भी कल्टी मार ... ?''

रमन ने उसे फिर समझाया कि तुझे तो पता है रोहित बॉलीबॉल की प्रैक्टिस के लिए रुकता

है स्कूल में और फिर हमारा सामाजिक ही नहीं बल्कि सहपाठी होने के नाते एक तरह से पारिवारिक रिश्ता है। ये लड़के जो बदतमीजी कर रहे हैं वह बहुत गलत है, एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते भी हमें उसकी मदद ... ''

पर नमित उसे धकिया कर बोला कि उसे यह किताबी ज्ञान बघारने की जरूरत नहीं ... वह नहीं आएगा, तो रमन अकेला दौड़ कर आया और अपनी पूरी ताकत से लड़कों को धक्का मारकर मुझे बचाते हुए अलग ले गया तब तक बस आ गई उसने मुझे जल्दी से बस में चढ़ाया फिर हमारे बस स्टॉप तक छोड़ कर गया।

''राशि तुमने अपनी मम्मी को बताया'' तभी उनकी बात सुनती समझती नीरजा की माँ ने आकर पूछा तो वह कहने लगी ''अरे आंटी आप, नहीं इस घटना के बारे में अगर उन्हें जरा सी भनक भी मिल गई तो वे मेरा स्कूल जाना ही बंद कर देंगी। मैं बहुत परेशान थी सो किताब लेने के बहाने अपनी दोस्त नीरजा से अपनी परेशानी शेयर करने आ गई। चलती हूँ वरना मम्मी नाराज हो जाएंगी।''

''ऐसा कैसे भला इसमें तुम्हारा क्या कसूर ... है भला ... ''

''मम्मी राशि की मम्मी बहुत कन्जरवेटिव हैं लड़के-लड़की में बहुत फर्क करती हैं। इसे ट्रिप पर भी नहीं जाने देंगी। आपकी तो दोस्त हैं न वो आप उन्हें समझाइये न ... ।''

''ठीक है चलो मैं कोशिश करके देखती हूँ ...''

तीनों घर पहुँचते हैं तभी रोहित घर लौट आता है। ''आओ नीरजा, अरे नीलम बहन आप भी आओ बैठो ... '' राशि की माँ कहती है।

''अरे राशि आ जल्दी देख भाई आ गया है जा उसका बैग लेकर अन्दर रख और उसे दूध गर्म करके दे साथ में भिगो कर रखे हुए बादाम भी दे।'' राशि तेजी से रोहित का बस्ता रखकर किचन में चली जाती है। रोहित माँ से कहता है ''स्कूल का ट्रिप जा रहा है आगरा जयपुर ..., कल 2000 रुपये ले जाने हैं।''

''हाँ... हाँ... अच्छी बात है जरूर चले जाना। यों बाहर भ्रमण पर जाने से अपने देश के इतिहास तथा संस्कृति के बारे में ज्ञानवर्द्धन होता है कल ले जाना पैसे ...''

तभी राशि किचन से रोहित के लिए दूध लाकर उसे देती है। फिर माँ से इसरार करके उसे

कहती है ''मम्मी मुझे भी जाना है ट्रिप पर ... क्या कह रही है तू ट्रिप पर जाएगी। तुझे भाई के बराबर स्कूल में पढ़ने भेज रही हूँ यही क्या कम है। यह ट्रिप टूअर जैसी आवारागर्दी लड़कियों के लिए नहीं होती। पढ़ाई कर और बाकी समय में चूल्हे-चौके का काम सीख। हम तेरे ये ऊल-जलूल शौक पूरे नहीं कर सकते। हमारे समय में तो ...'' माँ गुस्से में भुनभुनाई। सुनकर राशि, नीरजा और उसकी माँ के पास आकर रोने लगती है ''मुझमें और रोहित भाई में क्या फर्क है। मम्मी पापा उसको अच्छा खाना-कपड़ा देते हैं मुझे बचा-खुचा। उसे नई चीजें नई किताबें और मुझे पुरानी तथा काम-चलाऊ। उसे गेम्स में हिस्सा लेने देते हैं टूर पर भेजने को भी राजी हैं उसे खूब पढ़ाने को कहते हैं जबकि मैं हमेशा फर्स्ट आती हूँ, घर का काम भी करती हूँ। घर में माँ-पापा सौतेला बर्ताव करते हैं बाहर बदमाश लड़के परेशान करते हैं आखिर क्यों। लगता है मुझे पैदा ही नहीं होना चाहिये था, या फिर लड़का होकर जन्मना चाहिए था। परन्तु अगर भगवान ने मुझे लड़की बना कर भेजा है तो इसमें मेरा क्या कसूर है?''

''मम्मी तुम रोज अखबारों में पढ़ती हो टी.वी. देखती हो कि लड़के-लड़की समान हैं। मैं तथा स्कूल के अध्यापक भी तुम्हें कितनी बार कहते हैं कि राशि में बहुत प्रतिभा है उसे खेलों तथा अन्य चीजों में भागीदारी करने दिया करो पर तुम हो कि मानती ही नहीं। अब उसे टूर पर भी नहीं जाने देना चाहती, भला क्यों उसे भी तो मेरे बराबर का हक है। ठीक है टूर पर या तो हम दोनों जाएँगे या फिर आप मुझे भी मना कर दो, मैं भी नहीं जाऊँगा ... ।'' कहकर रोहित भुनभुनाता हुआ अन्दर चला गया।

''सरला, रोहित ठीक कह रहा है अगर राशि भी टूर पर जाना चाह रही है तो उसे भी भेजो वो भी तो जाने अपने देश के समृद्ध इतिहास और संस्कृति के बारे में फिर रोहित भी तो साथ जा रहा है। क्योंकि इस तरह भेदभाव करके और लड़कियों पर जुल्म करने के कारण ही तो हमारे देश में लड़कियों की संख्या दिन पर दिन कम होती चली जा रही है। किशोरावस्था उम्र का वह मोड़ है जहाँ बच्चे छोटी-छोटी बात बहुत महसूस करते हैं हमें उनके बारे में संवेदनशील होना बहुत जरूरी है। देखो सरला, तुम एक औरत होने के साथ राशि की माँ भी हो। औरत होने के नाते तुम्हें उसका अधिकार उसे देने में पहल करनी चाहिए तभी तो उसका भाई और पुरुष वर्ग उसका सम्मान करेगा। अगर समाज की तंग सोच के कारण तुम्हें हमें लड़कों के मुकाबले में समान अधिकार नहीं मिल पाए तो कम से कम हम अपनी बेटियों को तो उनके समान अधिकार देने में पहल करें, ताकि उनकी

उम्र के वर्ग में उनके प्रति सम्मानजनक एवं स्वस्थ सोच का निर्माण हो सके।'' नीलम ने राशि की माँ सरला को समझाया तो नीरजा चहक कर बोली, ''और क्या आंटी''

लड़के-लड़की में नहीं कोई अन्तर,

दोनों से सृष्टि होती पूरी।

दोनों समाज के अंग समान,

दोनों ही परिवार की धुरी।

एक-सा दें दोनों को प्यार,

समान दोनों के अधिकार।

एक दूजे के करें सम्मान,

स्वस्थ रिश्तों की बने पहचान ... । ठीक है न।

''हाँ ठीक है बेटा कोशिश करूंगी। मैं भी अपनी सोच में सुधार लाकर अपनी बेटी को उसके समान अधिकार देने दिलवाने की ... ।''

भोली सोच

चाचाजी के नवनिर्मित घर का गृह-प्रवेश समारोह था। गहमा-गहमी के माहौल में अचानक फूफाजी ने पुकारा, ''दीदी ! ओ दीदी !'' कोई उत्तर न पाकर उन्होंने फिर जोर से आवाज लगाई, ''दीदी ! कहाँ हो तुम, सुनती क्यों नहीं ?''

मैंने दृष्टि फूफा जी की 'दीदी' को देखने के लिए उठाई तो चकित रह गई-उनकी ढाई-तीन बरस की गुड़िया-सी पोती इठलाती हुई आकर बोली, ''हाँ दादू !''

मुझे हैरानी में देख फूफाजी ने कहा, आज के खराब माहौल को देखते हुए मैंने इसका नाम 'दीदी' रख दिया है। गली-मोहल्ले, स्कूल-कॉलिज में जब लड़के इसे 'दीदी' कहकर पुकारेंगे तो इस पर बुरी दृष्टि नहीं डाल पाएंगे।''

मैं फूफा जी की भोली सोच पर बस मुस्कराकर रह गई।

नन्हीं जरूर जन्मेंगी

''भाभी तैयार नहीं हुई तुम, अभी तक! स्कूल नहीं जाना क्या?'' रोली ने अपनी भाभी सक पूछा तो उसकी बजाय माँ ने जबाब दिया।

''नहीं, आज रेशमा को तेरे भैया के साथ डॉक्टर के पास जाना है, तू उसकी छुट्टी की अर्जी ले जाना, स्कूल में दे देना।''

''क्यों क्या हुआ भाभी तुम्हें ... रात तक तो भली चंगी थी भाभी तुम ... कल दुर्गा अष्टमी में भोग प्रसाद बनाकर अच्छे से कंजक पूजन किया फिर अचानक आज क्या ... तबियत खराब हो गई क्या? ओ भाभी, बेबी तो ठीक है न ... ?''

''हाँ ठीक है रोली क्या बताऊँ, कैसे बताऊँ तुंझे वो ऽ ऽ ऽ ... ''

''बताओ न भाभी तुम ही तो कहती हो कि मैं तुम्हारी ननद कम और दोस्त ज्यादा हूँ वह भी अच्छी वाली फिर अपनी दोस्त से अपनी बात क्यों नहीं कह सकती।''

''असल में रोली मुझे डॉक्टर के पास इलाज के लिए नहीं बल्कि गर्भपात के लिए जाना है।''

''क्या ऽ ऽ ऽ यह क्या कह रही हो भाभी तुम?''

''हाँ असल में माँ, तेरे भैया और पापा सबको लड़का चाहिए लड़की बिलकुल नहीं। इसलिए सबने जिद्द करके मेरा भ्रूण परीक्षण करवाया। परसों शाम को सोनोग्राफी रिपोर्ट में लड़की होने की पुष्टि होने पर वे सब मुझे गर्भपात के लिए मजबूर कर रहे हैं।''

''पर भाभी आप कैसे तैयार हो गए ... ''

''हाँ, उन सबका कहना है कि तुम्हारी दोनों बहनों मौली तथा रिद्धि के लिए रिश्ते ढूंढने और फिर दहेज में उनकी कमर ही टूट चुकी है फिर भी उनके ससुराल वाले उन्हें जब-तब परेशान करते रहते हैं। दो लड़कियों को ठिकाने लगाने में ही उनकी जान हलकान हो गई और अभी तो रोली यानि तुम भी कतार में हो ... । वे कहते हैं आज के गन्दे सामाजिक वातावरण में लड़कियों का खर्चा, शिक्षा, इज्जत आवरू की सुरक्षा, दहेज की चिन्ता ... आसान काम नहीं, न, न नहीं ... लड़कियों की

अगली पीढ़ी झेलने और छाती पर एक और पत्थर बांधने के लिए उनमें मानसिक आर्थिक सामाजिक तौर पर कतई माद्दा नहीं है। इसलिए ... ''

''ओह भाभी, क्या हम लड़कियाँ सचमुच छाती पर बंधे पत्थर होती हैं। क्या तुम भी ऐसा सोचती हो। अभी आठ मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर स्कूल में आयोजित समारोह में SCERT गुड़गाँव से आए वक्ता ने बताया था कि समाज के जालिम रवैये के कारण ही तो देश में लिंगानुपात इतना बिगड़ गया है कि हरियाणा में 1000 लड़को के पीछे मात्र 832 कन्याएँ ही रह गई हैं। लड़का-लड़की में कोई फर्क नहीं होता दोनों को ईश्वरीय वरदान, संवैधानिक प्रावधान व नैसर्गिक एवं मानवीय अधिकारों के अन्तर्गत जन्मने, जीने, शिक्षा, समता इत्यादि के समान अधिकार प्राप्त हैं। आपने भी तो कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अपनी कई रचनाएँ पढ़कर वाहवाही लूटी थी। उसी दिन की तो बात है जब मैंने महिला दिवस की शुभकामनाएँ देने की मंशा से बगीचे से एक गुलाब तोड़ कर आपको दिया तो आपने मुझे कितना डॉटा था, 'ओह रोली क्यों हत्या कर दी तुमने इस नन्हीं कली की। देखो कैसी मुर्झा गई है यह अपनी शाख से जुदा होकर ... ''

''अरे भाभी इतना क्यों परेशान हो रही हो तुम। यह अगर टहनी पर भी लगी रहती तो भी चार छह दिन में मुरझा ही जाती। तुमने तर्क दिया था।'' याद करते हुए रेशमा ने जबाब दिया।

''हाँ, यों तो हम सब को भी मरना ही है पर अपनी उम्र भोगकर स्वाभाविक मौत पाने और हत्या में तो फर्क होता है न।'' कहकर आप मेरा हाथ थाम कर उस पौधे तक ले गई थी। उसकी टहनी से रिसते द्रव्य को छूकर बोली थीं कि देखो रोली अकेली कली ही नहीं उसके यों अलग होने से कितनी दुखी है यह टहनी ... कैसे बेजान हुई जा रही है, एक बेबस माँ जो ठहरी। अपनी बच्ची की हत्या पर नि:शब्द रो रही है। लुटी-पिटी सी मातम कर रही है ... घोर पाप है यह रोली। अब न मारना किसी मासूम कली को, न लूटना-सताना किसी माँ को ... जीने देना उनको, उनका ईश्वर प्रदत्त जीवन। एक फूल टूटने पर इतना परेशान होने वाली तुम आज खुद अपनी अजन्मी बेटी की हत्या के लिए तैयार हो गई हो यह क्या हो गया आपको। ... और फिर जब बेटी की हत्या के लिए मन बना ही लिया है तो फिर यह उदासी परेशानी का दिखावा क्यों।''

''रोली यह सच है कि अपनों के तर्क-वितर्क में फँस-उलझकर उनकी बातों में आकर तथा समाज के जालिमाना रवैये के यथार्थ को पल-पल भोगने जीने वाली मैं तो एक बार तो अपनी अजन्मी बेटी की हत्या के लिए तैयार हो गई थी परन्तु कल कंजक-पूजन के बाद जब मैं रात को

बिस्तर पर लेटी तो अचानक एक नन्ही सी परी मेरे सामने आ खड़ी हुई कहने लगी ''माँ दुर्गाष्टमी पर देवी तथा शक्ति स्वरूपा कंजकों के पाँव धोकर रोली मौली चन्दन भोग प्रसाद से उन्हें पूज रही थीं। देखकर कितनी खुश थी मैं कि कितनी अच्छी और संवेदनशील माँ की कोख से जन्म लेने वाली हूँ-मैं। पर आज तुम्हारे कातिलाना इरादे देखकर ... बस यही कहती हूँ कि माँ मत पूजना मुझे पर अपनी कोख से जन्मने का अपनी ममता, वात्सल्य, प्रेम की स्नेहिल छाया में पनपने बढ़ने तथा जीने का अधिकार दे दो मुझे ... जैसे कि तुम्हारी माँ ने तुम्हे दिया था क्योंकि मैं भी जन्मना और जीना चाहती हूँ। इस संसार की धूप छाँव को देखना भोगना चाहती हूँ-मैं। बदले में मैं तुम्हें बहुत सुख दूँगी, पल-पल तुम्हारा साथ दूँगी और ...

माँ तेरा ही तो अंश हूँ मैं मुझे कोख में न मार,

दे के जन्म तू दे दे मुझे जीने का अधिकार।

मातृत्व का बीज हूँ मैं रचती सकल संसार,

बेटी, बहन, पत्नी, माँ बनकर बाँटती जग में प्यार''

''रोली मेरी नन्हीं सी मासूमियत ने मुझे झिंझोड़ कर रख दिया और रात भर सोने नहीं दिया। मैंने सोच लिया है कि मैं उसे जरूर जन्म दूँगी पर माँ-पापा और तुम्हारे भैया को कैसे समझाऊँ ... मुझे डर लग रहा है ... ।''

''अरे भाभी, आप अपना यह इरादा पक्का रखो कि आप हमारी नन्हीं को जरूर जन्म देंगी। माँ-पापा, भैया को समझाने का तरीका भी निकल आएगा। मैं आपके साथ हूँ फिलहाल आप छुट्टी न मिलने की बात कहकर स्कूल चलो। रास्ते में अस्पताल की काऊंसलर से मदद मांगेंगे उसीने नेहा के परिवार को उसकी दूसरी भतीजी के जन्म के समय समझाने में मदद की थी।'' उत्साह में भरी रोली ने भाभी को हौसला बढ़ाया।

कन्या पूजन

कृति को मम्मीजी के पास छोड़कर सुरुचि मयंक के साथ डॉ. मिस सूद के क्लीनिक अपने भ्रूण-परीक्षण की रिपोर्ट लेने चली गई। रिपोर्ट पता लगने पर मयंक ने डॉ. सूद से गर्भपात के लिए एपॉइंटमेंट मांगा।

डॉ. सूद बारी-बारी दोनों की निर्विकार आँखों में झाँकते हुए बोलीं, ''आपने फैसला कर ही लिया है तो आप कल सुबह ही आ जाइए।''

सुरुचि एकदम बोली, ''कल! कल तो दुर्गा-अष्टमी है, मुझे कंजक अर्थात् कन्या-पूजन करना है, सो कल तो मैं नहीं आ सकती, परसों आ जाऊंगी।''

डॉ. सूद अनायास ही बोल उठीं, ''जो गर्भ में है, जिसकी हत्या करवाने जा रही हो, वह भी तो कन्या अर्थात् कंजक ही है। मत पूजना उसे, लेकिन कम से कम जन्म लेने का अधिकार तो दे ही सकती हो उसे। उससे अच्छा कन्या-पूजन हो ही नहीं सकता!''

रहस्य

गाँव के सरकारी स्कूल के निरीक्षण के दौरान निरीक्षक महोदया ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि वे बहुत खुश हैं, क्योंकि माता-पिता की सोच में बहुत बदलाव आया है। अब वे लड़के-लड़की में भेदभाव न रखते हुए अपनी बेटियों को भी शिक्षा दिलाने के लिए कृतसंकल्प हैं। मैं इस विद्यालय में लड़कियों की संख्या लड़कों की अपेक्षा अधिक देखकर बहुत प्रभावित हुई हूँ। इसके लिए निश्चित ही गाँव के लोग भी बधाई के पात्र हैं।

कार्यालय में चाय पीते समय प्राचार्य ने निरीक्षक महोदया को लड़कियों की अधिक संख्या होने के रहस्य का खुलासा करते हुए बताया, ''मैडम, असल में गाँव के लोग लड़कियों को सरकारी स्कूल में इसलिए भेजते हैं कि यहाँ लड़कियों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है तथा वर्दी, वजीफा आदि भी दिए जाते हैं। उससे वे स्चयं थोड़ा-बहुत पढ़ लिख भी लेती हैं तथा घर के लोगों को कुछ आर्थिक सहायता भी हो जाती है। लेकिन लड़कों के सुनहरे भविष्य को ध्यान में रखते हुए वे उन्हें प्राइवेट विद्यालयों में ही पढ़ने भेजते है!''

विषय सूची

क्रम सं.	पाठ का नाम	पृष्ठ सं.
1.	दरकते रिश्ते	1
2.	बर्फ होती संवेदनाएँ	5
3.	पुत्र-ऋण	6
4.	दादी माँ	8
5.	उम्र के उस मोड़ पर	11
6.	बेटा-बेटी	14
7.	भोली सोच	18
8.	नन्हीं जरूर जन्मेंगी	19
9.	कन्या पूजन	22
10.	रहस्य	23